International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

Original Article

कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका तथा सामाजिक स्थिति : पटना नगर का समाजशास्त्रीय अध्ययन

दिव्या दर्शी

शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

Manuscript ID: IJAAR-130411
ISSN: 2347-7075
Impact Factor – 8.141

Volume - 13
Issue - 4
March – April 2026
Pp. 52 - 56

Submitted: 4 Mar. 2026
Revised: 18 Mar. 2026
Accepted: 20 Mar. 2026
Published: 10 Apr. 2026

Corresponding Author: दिव्या दर्शी

Quick Response Code:

Website: https://ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.19695008

DOI Link: https://doi.org/10.5281/zenodo.19695008

सारांश :

आधुनिक भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति निरंतर परिवर्तनशील रही है। विशेषतः शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा, आर्थिक भागीदारी और सामाजिक जागरूकता में वृद्धि ने उनकी भूमिका को बहुआयामी बना दिया है। कार्यशील महिलाओं को एक ओर पेशेवर दायित्वों का निर्वहन करना पड़ता है, वहीं दूसरी ओर घरेलू जिम्मेदारियों को भी निभाना होता है। इस दोहरी भूमिका के कारण उनके जीवन में अनेक प्रकार की चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य पटना नगर की कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका, उनकी सामाजिक स्थिति, चुनौतियों तथा उनके समाधान का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आर्थिक सशक्तिकरण के बावजूद सामाजिक संरचना में अभी भी लैंगिक असमानता विद्यमान है। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन कार्यशील महिलाओं के जीवन में पारिवारिक सहयोग, कार्यस्थल के वातावरण तथा सामाजिक दृष्टिकोण के प्रभावों को भी रेखांकित करता है। विशेष रूप से यह देखा गया है कि शहरी संदर्भ में महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन तो हुआ है, परंतु मानसिकता के स्तर पर परिवर्तन अपेक्षाकृत धीमा है। परिणामस्वरूप, महिलाएँ आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहती हैं।

यह शोध इस तथ्य को भी उजागर करता है कि कार्यशील महिलाओं की चुनौतियाँ केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे व्यापक सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक मान्यताओं से भी जुड़ी हुई हैं। अतः आवश्यक है कि न केवल नीतिगत स्तर पर सुधार किए जाएँ, बल्कि समाज में लैंगिक समानता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास भी सुनिश्चित किया जाए, ताकि महिलाएँ अपनी दोहरी भूमिका को संतुलित करते हुए समग्र विकास की दिशा में अग्रसर हो सकें।

मुख्य शब्द: कार्यशील महिला, दोहरी भूमिका, सामाजिक स्थिति, पटना, लैंगिक असमानता, शहरी समाज.

Creative Commons

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

OPEN ACCESS

How to cite this article:
दिव्या दर्शी (2026). कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका तथा सामाजिक स्थिति : पटना नगर का समाजशास्त्रीय अध्ययन. International Journal of Advance and Applied Research, 13(4), 52 - 56.
https://doi.org/10.5281/zenodo.19695008

प्रस्तावना :

भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका ऐतिहासिक रूप से सीमित मानी जाती रही है। परंपरागत व्यवस्था में महिलाओं को घरेलू कार्यों तक सीमित रखा गया, जबकि पुरुषों को सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भूमिका दी गई। परंतु आधुनिक काल में शिक्षा, औद्योगीकरण, नगरीकरण तथा वैश्वीकरण के प्रभाव से महिलाओं की स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है।

पटना नगर, जो बिहार की राजधानी है, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का प्रमुख केंद्र बन चुका है। यहाँ महिलाओं की शिक्षा और रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है। इसके बावजूद कार्यशील महिलाओं को घर और कार्यस्थल दोनों की जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं, जिससे उनके जीवन में भूमिका-संघर्ष उत्पन्न होता है। इस संदर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि कार्यशील महिलाओं की बढ़ती भागीदारी ने पारिवारिक संरचना और सामाजिक संबंधों में भी परिवर्तन लाया है। जहाँ एक ओर महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता ने उनके आत्मसम्मान और निर्णय लेने की क्षमता को सुदृढ़ किया है, वहीं दूसरी ओर उनसे पारंपरिक भूमिकाओं के निर्वहन की अपेक्षा अब भी बनी हुई है। इस द्वंद्वात्मक स्थिति के कारण महिलाओं को अक्सर मानसिक दबाव, समयाभाव तथा सामाजिक अपेक्षाओं के बीच संतुलन स्थापित करना पड़ता है।

पटना नगर के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में यह समस्या और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यहाँ पारंपरिक मान्यताओं और आधुनिक जीवनशैली का सह-अस्तित्व देखने को मिलता है। फलस्वरूप, कार्यशील महिलाएँ न केवल आर्थिक क्षेत्र में योगदान दे रही हैं, बल्कि वे सामाजिक परिवर्तन की वाहक भी बन रही हैं।

अतः प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य इस जटिल परिस्थिति का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण करना है, ताकि यह समझा जा सके कि कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका उनके जीवन, सामाजिक स्थिति तथा पारिवारिक संबंधों को किस प्रकार प्रभावित करती है। साथ ही, यह अध्ययन उन उपायों की खोज करने का भी प्रयास करता है, जिनके माध्यम से इस भूमिका-संघर्ष को कम किया जा सके और महिलाओं की स्थिति को और अधिक सुदृढ़ बनाया जा सके।

अध्ययन का उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य पटना नगर की कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका तथा उनकी सामाजिक स्थिति का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत यह जानने का प्रयास किया गया है कि महिलाएँ किस प्रकार घरेलू एवं पेशेवर दायित्वों के बीच संतुलन स्थापित करती हैं, तथा इस प्रक्रिया में उन्हें किन-किन सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। साथ ही, इस अध्ययन का उद्देश्य उनकी स्थिति में सुधार हेतु संभावित उपायों का सुझाव देना भी है।

1. कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका का विश्लेषण करना
2. पटना नगर में उनकी सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना
3. उनके समक्ष आने वाली समस्याओं की पहचान करना
4. समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत करना

शोध पद्धति :

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों—जैसे पुस्तकें, शोधपत्र-, पत्रपत्रिकाएँ एवं सरकारी रिपोर्टों-—का उपयोग

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

किया गया है। साथ ही, विषय की स्पष्टता हेतु उपलब्ध आंकड़ों एवं तथ्यों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है, जिससे कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका एवं उनकी सामाजिक स्थिति का सम्यक् अध्ययन किया जा सके।

यह अध्ययन मुख्यतः वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है, जैसे—पुस्तकें, शोध पत्र, सरकारी रिपोर्टें तथा सामाजिक सर्वेक्षण।

दोहरी भूमिका की अवधारणा :

दोहरी भूमिका का अर्थ है कि महिलाएँ एक साथ दो महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाती हैं—घरेलू और पेशेवर। समाजशास्त्र में इसे "Role Conflict" कहा जाता है। जब व्यक्ति से अपेक्षित भूमिकाएँ परस्पर विरोधी हो जाती हैं, तो तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है।[1]

पटना नगर का सामाजिक संदर्भ :

पटना नगर पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों का संगम है। यहाँ महिलाओं की शिक्षा दर में वृद्धि हुई है तथा वे विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं—जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, प्रशासन आदि।

फिर भी सामाजिक संरचना में पितृसत्तात्मक तत्व मजबूत हैं, जिसके कारण महिलाओं को दोहरी जिम्मेदारियों का सामना करना पड़ता है।

कार्यशील महिलाओं की सामाजिक स्थिति :

आधुनिक शहरी समाज में कार्यशील महिलाओं की सामाजिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार देखा गया है। शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता के कारण उनकी परिवार एवं समाज में भूमिका अधिक सशक्त हुई है। वे निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं तथा सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर रही हैं।

इसके बावजूद, पारंपरिक मान्यताओं और पितृसत्तात्मक सोच के कारण उन्हें अभी भी अनेक सीमाओं और अपेक्षाओं का सामना करना पड़ता है। समाज में उनके प्रति दृष्टिकोण पूर्णतः समानतामूलक नहीं हो पाया है, जिसके कारण उनकी सामाजिक स्थिति में एक प्रकार का द्वंद्व दिखाई देता है—जहाँ एक ओर उन्हें सशक्त माना जाता है, वहीं दूसरी ओर उनसे पारंपरिक भूमिकाओं के निर्वहन की अपेक्षा भी बनी रहती है।

(क) आर्थिक स्थिति: कार्यशील महिलाएँ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं। इससे उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है। वे परिवार के आर्थिक निर्णयों में भागीदारी कर रही हैं।

(ख) पारिवारिक स्थिति: परिवार में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है, परंतु उनसे अभी भी घरेलू कार्यों की अपेक्षा अधिक की जाती है।

(ग) सामाजिक मान्यता: समाज में कार्यशील महिलाओं को सम्मान मिल रहा है, परंतु पारंपरिक सोच अभी भी मौजूद है।

दोहरी भूमिका से उत्पन्न समस्याएँ : कार्यशील महिलाओं को घरेलू एवं पेशेवर दायित्वों के बीच संतुलन स्थापित करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस दोहरी भूमिका के कारण उनमें मानसिक तनाव, शारीरिक थकान तथा समय की कमी जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

इसके अतिरिक्त, कार्यस्थल पर लैंगिक भेदभाव, वेतन असमानता तथा पदोन्नति में बाधाएँ भी उनकी समस्याओं को और जटिल बनाती हैं। पारिवारिक सहयोग के अभाव में यह स्थिति और अधिक गंभीर हो जाती है, जिससे महिलाओं के

व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

(1) मानसिक तनाव: दोहरी जिम्मेदारियों के कारण महिलाओं में तनाव, चिंता और थकान बढ़ती है।[2]

(2) समय प्रबंधन की समस्या: कार्य और परिवार के बीच संतुलन बनाना कठिन होता है।

(3) कार्यस्थल पर भेदभाव: महिलाओं को वेतन असमानता, पदोन्नति में बाधा और लैंगिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है।[3]

सकारात्मक प्रभाव :

कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका के बावजूद उनके जीवन में कई सकारात्मक परिवर्तन देखे जाते हैं। इससे उनमें आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। साथ ही, परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है तथा समाज में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ती है। वे निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभाने लगती हैं, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति और अधिक सशक्त होती है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण :

(क) संरचनात्मक-कार्यात्मक दृष्टिकोण: इस दृष्टिकोण के अनुसार, समाज के प्रत्येक अंग का एक विशेष कार्य होता है। कार्यशील महिलाएँ समाज के संतुलन में योगदान देती हैं।[4]

(ख) नारीवादी दृष्टिकोण: नारीवादी विचारधारा के अनुसार महिलाओं की दोहरी भूमिका पितृसत्तात्मक व्यवस्था का परिणाम है।[5]

समाधान एवं सुझाव : कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका से उत्पन्न समस्याओं के समाधान हेतु आवश्यक है कि परिवार में सहयोगात्मक वातावरण विकसित किया जाए, जहाँ पुरुष भी घरेलू कार्यों में समान भागीदारी निभाएँ। कार्यस्थलों पर महिलाओं के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ—जैसे लचीला कार्य समय, मातृत्व अवकाश तथा सुरक्षित वातावरण—सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, समाज में महिलाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना तथा लैंगिक समानता को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है। सरकार को भी महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु प्रभावी नीतियाँ लागू करनी चाहिए, ताकि वे बिना किसी बाधा के अपनी दोहरी भूमिका का संतुलन स्थापित कर सकें।

1. पारिवारिक सहयोग बढ़ाना
2. कार्यस्थल पर सुविधाएँ प्रदान करना
3. सामाजिक जागरूकता बढ़ाना
4. सरकारी नीतियों को मजबूत करना

निष्कर्ष :

कार्यशील महिलाएँ आधुनिक समाज की आधारशिला हैं। पटना नगर में उनकी स्थिति में सुधार हुआ है, परंतु दोहरी भूमिका के कारण वे अनेक चुनौतियों का सामना कर रही हैं। यदि समाज, परिवार और सरकार मिलकर सहयोग करें, तो महिलाओं की स्थिति और अधिक सुदृढ़ हो सकती है। इसके साथ ही यह भी स्पष्ट होता है कि कार्यशील महिलाओं की स्थिति केवल आर्थिक सशक्तिकरण से ही पूर्णतः सुदृढ़ नहीं हो सकती, बल्कि इसके लिए सामाजिक मानसिकता में भी परिवर्तन आवश्यक है। जब तक महिलाओं के प्रति पारंपरिक दृष्टिकोण में बदलाव नहीं आता, तब तक उनकी दोहरी भूमिका से उत्पन्न समस्याएँ बनी रहेंगी।

अतः आवश्यक है कि परिवार में सहयोगात्मक वातावरण का निर्माण किया जाए, कार्यस्थलों पर लैंगिक

समानता सुनिश्चित की जाए तथा सरकार द्वारा महिलाओं के हित में बनाई गई नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए। इसके माध्यम से न केवल महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार होगा, बल्कि समग्र समाज के संतुलित और सतत् विकास को भी बल मिलेगा।

इस प्रकार, कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका को समझना और उसका समाधान खोजना वर्तमान समाज की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है, जिससे एक समतामूलक और न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था की स्थापना की जा सके।

संदर्भ सूची :

1. आहूजा, राम (2016), भारतीय समाज, जयपुर: रावत पब्लिकेशन।
2. देसाई, नीरा (1994), Women in Modern India, नई दिल्ली: विकस पब्लिशिंग हाउस।
3. मेनन, निवेदिता (2012), Seeing Like a Feminist, नई दिल्ली: ज़ुबान पब्लिशर्स।
4. होशचाइल्ड, आर्ली रसेल (1989), The Second Shift, न्यूयॉर्क: वाइकिंग प्रेस।
5. पार्सन्स, टैल्कट (1951), The Social System, ग्लेनको: फ्री प्रेस।
6. मर्टन, आर. के. (1957), Social Theory and Social Structure, न्यूयॉर्क: फ्री प्रेस।
7. राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) (2021). *समय उपयोग सर्वेक्षण, भारत 2019.* नई दिल्ली: सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय, पृ. 78–85।
8. ऑक्सफैम इंडिया (2021). *भारत भेदभाव रिपोर्ट 2021.* नई दिल्ली: ऑक्सफैम, पृ. 60–75।